उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय हरिद्वार

विभाग– शिक्षाशास्त्र

एम0ए0 (शिक्षाशास्त्र) का सम्भावित पाठ्यक्रम

सैमेस्टर – प्रथम

एम0ए0 (प्रथम वर्ष) शिक्षाशास्त्र

सेमेस्टर – 1

प्रश्न पत्र संख्या – 1, शिक्षा के दार्शनिक आधार

भाग–1

पूर्णांक–100

(बाह्य–80, आन्तरिक–20)

उद्देश्यः–

1. शिक्षा और दर्शन के सम्प्रत्यय की व्याख्या कर सकेगें
2. छात्र शिक्षा और दर्शन के सम्बन्ध को स्पष्ट कर सकेगें।
3. छात्र शिक्षा में दर्शन के योगदान को समझ सकेगें।
4. छात्र शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न भारतीय दर्शन एवं पाश्चात्य दार्शनिकों के योगदान की व्याख्या कर सकेगें।
5. छात्र स्वतन्त्रता एवं समानता के सम्प्रत्यय को समझ कर इसका शिक्षा के क्षेत्र में महत्त्व की व्याख्या कर सकेगें।

ईकाई –1

शिक्षा एवं दर्शन

(क) सम्प्रत्यय एवं परिभाषा।

(ख) प्रकृति।

(ग) सम्बन्ध।

भारतीय दर्शन

(क) सांख्य।

(ख) वेदान्त।

(ग) न्याय।

(घ) बौद्ध दर्शन।

(ड़) जैन दर्शन।

(च) इस्लाम ।

सम्प्रत्यय, तत्व एवं मूल्य मीमांसा तथा इनका शैक्षिक निहितार्थ।

ईकाई – 2

दर्शन का आधुनिक सम्प्रत्यय

(क) तार्किक विश्लेषण

(ख) तार्किक अनुभववाद

(ग) सापेक्षवाद

ईकाई – 3

प्रमुख पाश्चात्य दर्शन

(क) प्रकृतिवाद ।

(ख) आदर्शवाद।

(ग) प्रयोजनवाद।

ज्ञान मीमांसा, तत्वमीमांसा एवं मूल्यमीमांसा के सन्दर्भ में, तथा इनके अनुसार शिक्षा के उद्देश्य, विषयवस्तु शिक्षणविधि एवं शैक्षिक निहितार्थ।

ईकाई – 4

शिक्षा का सामाजिक दर्शन

(क) स्वतन्त्रता

(ख) समानता

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. शर्मा आर0 ए0 – शिक्षा दर्शन
2. सक्सेना आर0एस0 – शिक्षा सिद्धान्त
3. रस्क0 आर0 एस0 – शिक्ष के दार्शनिक सिद्धान्त
4. पाण्डेय आर0 एस0 – शिक्षा दर्शन

एम0ए0 (प्रथम वर्ष) शिक्षाशास्त्र

सेमेस्टर – 1

प्रश्न पत्र संख्या –**II**, शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार

पूर्णांक–100

(बाह्य–80, आन्तरिक–20)

उद्देश्यः–

1. शैक्षिक समाजशास्त्र के अर्थ एवं सम्प्रत्यय को जान सकेगे।
2. समाजिक संख्याओं के सम्प्रत्यय को समझ सकेंगे।
3. समाजिक अन्तर्क्रिया एवं इसका शैक्षिक निहितार्थ को समझ सकेंगे।
4. समाजिक परिवर्तन के सम्प्रत्यय को समझ सकेंगे।

ईकाई –1

1. शैक्षिक समाजशास्त्र एवं शिक्षा के समाजशास्त्र का सम्प्रत्यय

(क) समाजिक संस्थाएं एवं इनका सम्प्रत्यय।

(ख) समाजिक संस्थाओं को प्रभावित करने वाले कारक लोक परम्पराएं, समुदाय, विभिन्न संस्थाएं एवं मूल्य।

(ग) समाजिक संस्थाओं के गत्यामक विशेषताएं एवं इनका शैक्षिक निहितार्थ।

ईकाई –2

2. समाजिक अन्तर्क्रिया एवं इसका शैक्षिक निहितार्थ–

(क) सामाजिक समूह एंव अन्य समूहों के साथ सम्बन्ध समूह गतिशीलता।

(ख) सामाजिक स्तरीकरण, सम्प्रत्यय एवं इसका शैक्षिक निहितार्थ।

ईकाई – 3

3. संस्कृति <u>अर्थ एवं प्रकृति</u>

(क) संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में शिक्षा की भूमिका।

(ख) शिक्षा के सांस्कृतिक निर्धारक तत्व।

(ग) शिक्षा और सांस्कृतिक परिवर्तन।

ईकाई – 4

सामाजिक परिर्वतन– अर्थ, सम्प्रत्यय (भारतीय सन्दर्भ में) शहरीकरण, पश्चिमीकरण, आधुनिकीकरण, एवं सांस्कृतिकरण का सम्प्रत्यय (भारतीय सन्दर्भ में) एवं इसका शैक्षिक निहितार्थ।

सामाजिक–आर्थिक कारक एवं इनका शिक्षा पर प्रभाव

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. जायसवाल सीताराम – शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार
2. मिश्र डॉ0 भास्कर – शिक्षा संस्कृति, एक सन्दर्भ
3. पाठक डॉ0 आर0 पी0 – शिक्षाशास्त्र एक परिचय
4. सक्सेना एन0आर0 स्वरूप – शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त

एम0ए0 (प्रथम वर्ष) शिक्षाशास्त्र

सेमेस्टर – 1

प्रश्न पत्र संख्या –**III**, शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार

उद्देश्यः–

1. छात्र शिक्षा में मनोविज्ञान को प्रयोगात्मक विज्ञान के रूप में समझ सकेगें।
2. छात्र शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र को समझ सकेगें।
3. वृद्धि एवं विकास की प्रक्रिया की व्याख्या कर सकेगें।
4. वैयक्तिक भिन्नता का अर्थ एवं सम्प्रत्यय को समझ सकेगें।
5. विशिष्ट एवं मन्दबृद्धि बालकों के सम्प्रत्यय को समझ सकेगें।
6. सृजनात्मकता के सम्प्रत्यय एवं विशेषताओं समझ सकेगें, साथ ही सृजनात्मक का शिक्षा में महत्त्व की व्याख्या कर सकेगें।

ईकाई –1

1. शिक्षा एवं मनोविज्ञान का अर्थ–
   (क) शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सम्बन्ध।
   (ख) शैक्षिक मनोविज्ञान का क्षेत्र।
2. शिक्षा मनोविज्ञान की विधियां–

(क) प्रयोगात्मक।
(ख) उपचारात्मक
(ग) डिफरेशियल।

ईकाई –2

1. बाल्यावस्था एवं किशोरवस्था में वृद्धि एवं विकास–
   (क) शारीरिक ।
   (ख) सामाजिक ।
   (ग) संवेगात्मक ।
   (घ) मानसिक
2. वैयक्तिक भिन्नता–
   (क) सम्प्रत्यय एवं क्षेत्र
   (ख) निर्धारक तत्त्व–वैयक्तिक भिन्नता में वंशानुक्रम एवं वातावरण की भूमिका।
   (ग) शैक्षिक कार्यक्रमों के आयोजन के लिए वैयक्तिक भिन्नता का महत्त्व।

ईकाई – 3

3. प्रतिभाशाली एवं मन्द बुद्धि बालक–
   (क) अर्थ एवं विशेषताएं
   (ख) आवश्यकता एवं समस्याएं

ईकाई – 4

4. सृजनात्मकता
   (क) सम्प्रत्यय ।
   (ख) विशेषताएं ।
   (ग) सृजनात्मकता का विकास।
   (घ) शिक्षा में सृजनात्मकता का महत्त्व।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. भटनागर, नरेश – शिक्षा मनोविज्ञान, रस्तोगी प्रकाशन मेरठ, उ0प्र0
2. गुप्ता एस0पी0 – शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक मन्दिर, विश्वविद्यालय मार्ग
3. माथुर एस0 एस0 – शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा उ0प्र0
4. सारस्वत मालती – शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा आलोक प्रकाशन इलाहाबाद
5. मिश्रा डॉ0 लोक मान्य – आधुनिक शिक्षामानोविज्ञान मृगानी प्रकाशन लखनऊ।
6. डॉ0 सिंह फतेह – शिक्षा मनोविज्ञानम् आदित्य प्रकाशनम् जयपुर।

एम0ए0 (प्रथम वर्ष) शिक्षाशास्त्र

सेमेस्टर – 1

प्रश्न पत्र संख्या –**IV**, शिक्षा में अनुसन्धान विधियां

भाग–1

पूर्णांक–100

(बाह्य–80, आन्तरिक–20)

उददेश्य–

1. छात्र अनुभव एवं तर्क द्वारा वैज्ञानिक ज्ञान प्राप्त कर सकेगें।
2. शिक्षा अनुसंधान का अर्थ, क्षेत्र, प्रकृति एवं उद्देश्यों की व्याख्या कर सकेगें।
3. शिक्षा अनुसंन्धान के नवाचार को समझ सकेगें।
4. अनुसंन्धान की समस्या का अर्थ, प्रकृति एवं स्रोत की व्याख्या कर सकेगें।
5. परिकल्पना के सम्प्रत्यय एव सम्बन्धित साहित्य अध्ययन के महत्त्व को समझ सकेगें।
6. प्रदत्त संकलन एवं शोध उपकरणों के अर्थ एवं प्रकारों की व्याख्या कर सकेगें।
7. आदर्श का अर्थ एवं जनसंख्या के स्वरूप की व्याख्या कर सकेगें।

ईकाई –1

1. वैज्ञानिक ज्ञान प्राप्ति की विधियां, परम्पराएं, अनुभव, तर्क, अगमनात्मक एवं निगमानात्मक
2. शैक्षिक अनुसन्धान की प्रकृति एवं क्षेत्र–
   (क) अर्थ, प्रकृति, एवं सीमाएं
   (ख) शैक्षिक अनुसन्धान की आवश्यकता एवं उद्देश्य
   (ग) वैज्ञानिक खोज एवं सिद्धान्त का विकास
   (घ) मूलभूत, अनुप्रयोगात्मक एवं क्रियात्मक अनुसन्धान
   (ड) गुणात्मक एवं मात्रात्मक अनुसन्धान।

ईकाई –2

3. शैक्षिक अनुसंन्धान में प्रचलित नवीन प्रणालियां–
4. अनुसंन्धान की समस्या का निर्माण–

(क) समस्या के पहचान के लिए स्रोत एवं कसौटी।

(ख) चरों की पहचान एवं क्रियान्वयन।

(ग) सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन, महत्त्व एवं विभिन्न स्रोत (इन्टरनेट इत्यादि)

(घ)अनुसन्धानों में के विभिन्न प्रकार के परिकल्पनाओं का निमार्ण

ईकाई –3

5. आंकड़ों का संकलन

(क) आंकड़ो के प्रकार, गुणात्मक एवं मात्रात्मक।

(ख) शोध के उपकरण, विधियाँ एवं इनकी विशेषताएं, अच्छे शोध उपकरण के गुण ।

(ग) प्रश्नावली ।

(घ)साक्षात्कार।

(ड़) अवलोकन

(च) समाजमिति विधियां।

(छ) प्रक्षेपी विधियां

ईकाई–4

6. न्यादर्श–जनसंख्या एवं न्यादर्श का सम्प्रत्यय,

(क) अच्छे न्यादर्श के गुण एवं सोपान।

(ख) न्यादर्श की विभिन्न विधियां–सम्भाव्य एवं असम्भाव्य।

(ग) न्यादर्श त्रुटियां एवं इसे कैसे कम कर सकते है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. सिंह बैस नरेन्द्र एवं प्रीति अरोड़ा – शैक्षिक अनुसंन्धान की विधियां, पदमा प्रकाशन जयपुर
2. त्रिपाठी मधुसूदन – शिक्षा अनुसन्धान, ओमेगा, प्रकाशन नई दिल्ली
3. प्रो0 श्रीवास्तव सी0वी0 डॉ0 शर्मा माता प्रसाद – शैक्षिक अनुसन्धान की विधियां, अपोलो प्रकाशन, जयपुर
4. डॉ0 शर्मा सुदेश कुमार – शैक्षिक–प्रविधि–शास्त्रम्, दीप माधव प्रकाशन, जयपुर

एम0ए0 (प्रथम वर्ष) शिक्षाशास्त्र

सैमेस्टर– 1

प्रश्न पत्र संख्या –**V**, शिक्षा में प्रदत्तों (आंकड़ों) का विश्लेषण की विधियां

भाग–1

पूर्णांक–100

(बाह्य–80, आन्तरिक–20)

उददेश्य–

1. छात्र सांख्यिकीय के विभिन्न प्रकारों एवं मापों को जान सकेगें।
2. छात्रों उचित सांख्यिकीय ज्ञान एवं प्रयोग को समझ सकेगें।
3. केन्द्रीय प्रवृत्ति माप एवं डिस्पर्सन के सम्प्रत्यय का ज्ञान हो सकेगा।
4. अप्राचलिक परीक्षण का ज्ञान एवं प्रयोग कर सकेगे।

ईकाई–1

1. शैक्षिक आंकड़ों की प्रकृति

(क) गुणात्मक एवं मात्रात्मक, मापन के स्केल, वर्णनात्मक एवं आनुभाविक (Inferential) साख्यिकी।

(ख) आंकड़ों का व्यवस्थापन एंव चित्रीय प्रदर्शन, आवृत्ति वितरण, आवत्ति बहुमुख हिस्ट्रोग्राम आवृत्ति विचरण

(ग) केन्द्रीय प्रवृत्ति के माप–सम्प्रत्यय, विशेषताएं, गणितीय मापन एवं उपयोग, मध्यमान, मध्यांक एवं बहुलांक।

ईकाई–2

2. विचरणशीलता के माप– सम्प्रत्यय, विशेषताएं, अभिकलन विस्तार।
3. क्वाटाईल विचलन, औसत, विचलन मानक विचलन, विचरण।
4. सापेक्ष स्थिति का मापन–प्रतिशतक एवं प्रतिशतांक।

ईकाई–3

1. अप्राचलिक परीक्षण–अर्थ अवधारणा अभिकलन एवं निम्नलिखित का उपयोग।
2. समानता एवं स्वतन्त्रता का कार्ड–स्कावयर टेस्ट एवं आसंग सारणी के लिए क्रास ब्रेक अप का व्यवस्थापना, साईज परीक्षण।

ईकाई–4

1. सामान्य प्राथिमकता वक्र–अर्थ एवं सार्थकता, विशेषताएं एवं प्रयोग, स्कीनेस एवं कर्टोसिस

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. शर्मा शशी प्रभा – शिक्षा और मनोविज्ञान में मापन एवं मूल्यांकन, कनिष्क
   शर्मा मधुलिका – पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली।
2. शर्मा डॉ0 आर0 ए0 – मापन एवं मूल्यांकन में साख्यिकी, लायल बुक डिपो मेरठ
3. डॉ0 वेंकटराव पी0 – शिक्षा सांख्यिकी, राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ तिरूपति
4. त्रिपाठी मधुसूदन – शिक्षा अनुसंधान और सांख्यिकी ओमेगा प्रकाशन नई दिल्ली

द्वितीय सेमेस्टर

एम0ए0 (प्रथम वर्ष) शिक्षाशास्त्र

सैमेस्टर–**II**

प्रश्न पत्र सं0–**VI**शिक्षा के दार्शनिक आधार

भाग–दो

अंक–100

(बाह्य–80, आन्तरिक–20)

उद्देश्य :–

1. छात्र समसामायिकभारतीय शिक्षामेंभारतीय दार्शनिकों के योगदानको समझसकेंगे।
2. हमारे जीवन में शैक्षिकमूल्यों के प्रभावको समझसकेंगे।
3. भारतीय संविधान द्वाराशिक्षा के लिए किए गए प्रावधानों की व्याख्या करसकेंगे।
4. लोकतन्त्र की विशेषताओं एवंकार्योंकाज्ञानप्राप्तकरसकेंगे।

इकाई–1

(5) पाश्चात्य दर्शन–मुख्य विचारधाराएँ–

(क) यथार्थवाद।

(ख) तार्किकसापेक्षवाद।

(ग) अस्तित्ववाद।

(घ)मार्क्सवाद।

ज्ञानमीमांसा, मूल्यमीमांसा एवंतत्त्वमीमांसा, तथाइनकाशिक्षा के उद्देश्य, विषय वस्तु एवंशिक्षण–विधियों के सन्दर्भमें शैक्षिकनिहितार्थ।

इकाई–2

(6) भारतीय दार्शनिक के शैक्षिकविचार एवं योगदान–

(क) विवेकानन्द।

(ख) गाँधी, टैगोर ।

(ग) अरविन्दो।

(घ) जे0 कृष्णमूर्ति।

इकाई–3

(7) शिक्षा एवंइसकीराष्ट्रीय मूल्य विकासमेंभूमिका (विकासशील देशों के सन्दर्भ में)।

(8) भारतीय संविधान।

इकाई–4

(9) ज्ञान की प्रकृति एवंज्ञानप्राप्तिकीप्रक्रिया।

(10) शिक्षाकासामाजिकदर्शन–

(क) लोकतन्त्र।

(ख) उत्तरदायित्व।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. शर्मा आर0 ए0 – शिक्षा दर्शन
2. सक्सेना आर0एस0 – शिक्षा सिद्धान्त
3. रस्क0 आर0 एस0 – शिक्ष के दार्शनिक सिद्धान्त
4. पाण्डेय आर0 एस0 – शिक्षा दर्शन

एम0ए0 (प्रथम वर्ष) शिक्षाशास्त्र

सैमेस्टर–**II**

प्रश्न पत्र सं0–**VII**शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार

भाग–दो

अंक–100

(बाह्य–80, आन्तरिक–20)

उद्देश्य :–

1. आर्थिक एवं सामाजिक रूप पिछड़े वर्ग की पहचान कर सकेंगे,विशेष रूपसेअनसूचितजाति एवंजनजाति, महिलाएँ ग्रामीणजनसंख्या के परिप्रेक्ष्य में।
2. शिक्षाऔरलोकतन्त्र के सम्बन्ध में समझना।
3. समाजीकरण एवंसामाजिकविकासमेंशिक्षा के योगदानकोबताना।
4. समानता एवं शैक्षिकअवसरोंकीसमानता के विषय मेंज्ञानप्रदानकरना।

इकाई–प्रथम

(1) शिक्षामेंसामाजिकसिद्धान्त–

(क) सामाजिक–आर्थिककारक एवं शिक्षा पर इसकाप्रभाव।

(ख) समाज के आर्थिक एवंसामाजिक रूपसे पिछड़ावर्गविशेष रूपसेअनुसूचितजाति एवंजनजातिवर्ग, महिला एवंग्रामीणजनसंख्या।

इकाई–द्वितीय

(2) शिक्षाकासम्बन्ध–

(क) लोकतन्त्र।

(ख) स्वतन्त्रता।

(ग) राष्ट्रवाद एवं राष्ट्रीय समन्वय।

(घ)अन्तर्राष्ट्रिय सद्भाव।

इकाई–तृतीय

(3) शिक्षा एवंसमाज–

(क) समाजिकप्रणलीा के रूपमें।

(ख) सामाजीकरण कीप्रक्रिया के रूपमें।

(ग) सामाजिकविकासकीप्रक्रिया के रूपमें।

(घ)शिक्षा एवंराजनीति।

(ड़) शिक्षा एवं धर्म।

इकाई–चतुर्थ

(4) समानशैक्षिकअवसर एवंसमानता–

(क) सामाजिक समता एवं शैक्षिक अवसरों की समान्ता के सन्दर्भ में शिक्षा।

(ख) शैक्षिकअवसरोंकीअसमानता एवंउसकासामाजिकविकासपरप्रभाव।

(ग) सामाजिकसिद्धान्त (सामाजिक परिवर्तन के सम्बन्ध में)–

1. मार्क्सवाद
2. समग्र मानवता वाद (स्वदेशी पर आधारित)

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. जायसवाल सीताराम – शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार
2. मिश्र डॉ0 भास्कर – शिक्षा संस्कृति, एक सन्दर्भ
3. पाठक डॉ0 आर0 पी0 – शिक्षाशास्त्र एक परिचय
4. सक्सेना एन0आर0 स्वरूप – शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त

सैमेस्टर**II**

प्रश्न पत्र सं0–**VIII** शिक्षा का मनोवैज्ञानिक आधार

भाग–दो

अंक–100

(बाह्य–80, आन्तरिक–20)

उद्देश्य :–

1. बुद्धि के सम्प्रत्यय एवंप्रकृतिकाज्ञानप्रदानकरना।
2. बुद्धि की सिद्धान्तोंकाआलोचनात्मक अध्ययन।
3. व्यक्तित्व एवंव्यक्तित्वनिर्धारकतत्वोंकाज्ञानप्राप्तकरना।
4. अधिगम के सम्प्रत्यय एवंविशेषताओंकाज्ञान।
5. अभिप्रेरणा की अवधारणाकाज्ञान।
6. मानसिकस्वास्थ्य, मानसिकस्वास्थ्य विज्ञान एवंसमायोजनप्रक्रिया की व्याख्या।

इकाई–प्रथम

1. बुद्धि–
   (क) बुद्धि की परिभाषा एवंप्रकृति।
   (ख) सिद्धान्त–
      (i) द्विकारकसिद्धान्त (स्पीयरमैन)।
      (ii) बहुकारकसिद्धान्त ।
      (iii) समूहकारकसिद्धान्त)।
      (iv) गिलफोर्डकीबुद्धि की संरचना।
      (v) पदानुक्रमिता।

(v) बुद्धि का मापन (दो शाब्दिक एवं दो अशाब्दिक परीक्षण।

इकाई–द्वितीय

(2) व्यक्तित्व–
   (क) अर्थ एवंनिर्धारकतत्त्व।
   (ख) प्रकार एवंगुण सिद्धान्त।
   (ग) व्यक्तित्वपरीक्षण (आत्मनिष्ठ एवंप्रक्षेपीविधियां)।

इकाई–तृतीय

(3) अधिगम–
   (क) अर्थ।
   (ख) सिद्धान्त एवंइनका शैक्षिकनिहितार्थ–
      (i) पॉवलावका शास्त्रीय अनुबन्धन।
      (ii) स्कीनरकाक्रियाप्रसूत।

(**iii**) अन्तर्दृष्टिसिद्धान्त।

(4) हल्लकापुनर्बलनसिद्धान्त–
   (क) लेविनका क्षेत्र सिद्धान्त।
   (ख) गैनेकाअधिगमपदानुक्रमिता।
   (ग) अधिगमकोप्रभावितकरनेवालेकारक।

(5) अभिप्रेरणा–

(क) सम्प्रत्यय।

(ख) अभिप्रेरणा के सिद्धान्त–

(i)शारीरिकसिद्धान्त।

(ii)मुरेकीआवश्यकतासिद्धान्त।

(iii) मनोविश्लेषणात्मकसिद्धान्त।

(iv) मैस्लोकाआवश्यकतापदानुक्रमिताका सिद्धान्त।

(v) अभिप्रेरणाकोप्रभावितकरनेवालेकारक।

(6) मानसिकस्वास्थ्य एवंविज्ञान–

(क) समायोजन एवंसमायोजन की प्रक्रिया।

(ख) सुरक्षाप्रतिविधि।

सन्दर्भ ग्रन्थः–

1. भटनागर, नरेश – शिक्षा मनोविज्ञान, रस्तोगी प्रकाशन मेरठ, उ0प्र0
2. गुप्ता एस0पी0 – शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक मन्दिर, विश्वविद्यालय मार्ग
3. माथुर एस0 एस0 – शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा उ0प्र0
4. सारस्वत मालती – शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा आलोक प्रकाशन इलाहाबाद
5. मिश्रा डॉ0 लोक मान्य – आधुनिक शिक्षामानोविज्ञान म्गाक्षी प्रकाशन लखनऊ।
6. डॉ0 सिंह फतेह – शिक्षा मनोविज्ञानम् आदित्य प्रकाशनम् जयपुर।

एम0ए0 (प्रथम वर्ष) शिक्षाशास्त्र

सैमेस्टर–**II**

प्रश्न पत्र सं0–**IX** शिक्षा मेंअनुसन्धान विधियाँ

भाग–दो

अंक–100

(बाह्य–80, आन्तरिक–20)

उद्देश्य :–

1. छात्र अनुसन्धान के मुख्य दृष्टिकोणकोलिख सकेंगे।
2. अनुसन्धान के प्रारूप की व्याख्या करसकेंगे।

इकाई–प्रथम

(1) अनुसन्धान के प्रमुख दृष्टिकोण–

(क) वर्णनात्मकउपागम

(ख) कार्योत्तरअनुसन्धान।

(ग) प्रयोगशालाअनुसन्धान।

(घ) क्षेत्र अध्ययन।

(ड़) ऐतिहासिकअनुसन्धान।

इकाई–द्वितीय

(2) अनुसन्धानप्रारूप–अर्थ, सम्प्रत्यय, प्रकार एवंउपादेयता।

इकाई–तृतीय

(3) गुणात्मकअनुसन्धान–

(क) एन्थोग्राफिक एथनोग्राफिक्स विकासात्मक, डॉक्यूमेन्टरीविश्लेषण।

(ख) निष्कर्ष की वैधता एवंसीमाएँ, अनुसन्धान की वैधताकोप्रभावितकरनेवालेकारक, अनुसन्धान के निष्कर्ष की वैधताकोकैसे बढ़ा सकतेहैं?

इकाई–तृतीय

(4) अनुसन्धानप्रतिवेदन–

(क) अनुसन्धानप्रस्तावतैयारकरना (शोध संक्षिप्तिका)।

(ख) अनुसन्धानप्रतिवेदनलिखना एवंमूल्यांकनकरना।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. सिंह बैस नरेन्द एवं प्रीति अरोड़ा – शैक्षिक अनुसंन्धान की विधियां, पदमा प्रकाशन जयपुर
2. त्रिपाठी मधुसूदन – शिक्षा अनुसन्धान, ओमेगा ,प्रकाशन नई दिल्ली
3. प्रो0 श्रीवास्तव सी0वी0 डॉ0 शर्मा माता प्रसाद – शैक्षिक अनुसन्धान की विधियां, अपोलो प्रकाशन, जयपुर
4. डॉ0 शर्मा सुदेश कुमार – शैक्षिक प्रविधि शास्त्रम्, दीप माधव प्रकाशन, जयपुर

एम0ए0 (प्रथम वर्ष) शिक्षाशास्त्र

सैमेस्टर –II

प्रश्न पत्र सं0–X शिक्षा में प्रदत्त विश्लेषण की विधियां

भाग–दो

अंक–100

(बाह्य–80, आन्तरिक–20)

उद्देश्य :–

1. प्रोडक्ट मोमेन्ट एवं रैंक डिफरेंस सहसम्बन्ध के सम्प्रत्यय एवं विशेषताओं को समझ सकेगें।
2. रैक डिफरेंस सह सम्बन्ध एवं प्रोडक्ट मोमेन्ट के अन्तर को समझ सकेगें।
3. टी परीक्षण एवं एनोवा में अन्तर को समझ सकेगें।
4. रिग्रेसन एवं प्रिडिक्सन के सम्प्रत्यय एवं अवधारणा का ज्ञान हो सकेग

इकाई–प्रथम

(1)सहसम्बन्ध–अर्थ, विशेषताएं, अवधारणा एवंगणितीय मापन एवं उपयोग–

(क) प्रोक्डटमोमेन्टसहसम्बन्ध।

(ख) रैंकडिफरेन्ससहसम्बन्ध।

(ग) आंशित एवं बहुस्तरीय (Multiple)सहसम्बन्ध–अर्थ, अवधारणा एवंगणितीय मापनतथाउपयोग।

इकाई–द्वितीय

(2) शून्यपरिकल्पना।

(3) स्टैन्ड त्रुटि, सार्थकतासीमाएँ।

(4) IटाईपएवंIIत्रुटियाँ।

(5) एकमुखी एवं द्विमुखीपरीक्षण।

(6) सार्थकतापरीक्षण–

(क) मध्यमानअन्तर।

(ख) प्रतिशत एवंअनुपात में अन्तर।

(ग) सहसम्बन्धों मे अन्तर।

इकाई–तृतीय

रिग्रेसन एवं प्रिडिक्सन, सम्प्रत्यय, अवधारणा, रेखीय रिग्रेसन
समीकरण गणितीय मापन, स्टैन्र्ड त्रुटि का मा

इकाई–चतुर्थ

(8) एफ. परीक्षण।

(9) वन–वे–एनोवा

(क) अर्थ।

(ख) अवधारणा।

(ग) गणितीय मापन एवं उपयोग

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. शर्मा शशी प्रभा – शिक्षा और मनोविज्ञान में मापन एवं मूल्यांकन, कनिष्क शर्मा
   मधुलिका – पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली।
2. शर्मा डॉ0 आर0 ए0 – मापन एवं मूल्यांकन में साख्यिकी, लायल बुक डिपो मेरठ
3. डॉ0 वेंकटराव पी0 – शिक्षा सांख्यिकी, राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ तिरूपति
4. त्रिपाठी मधुसूदन – शिक्षा अनुसंधान और सांख्यिकी ओमेगा प्रकाशन नई दिल्ली

तृतीय सेमेस्टर

एम0ए0 (द्वितीय वर्ष) शिक्षाशास्त्र

सेमेस्टर–**III**

प्रश्न पत्र सं0–**XI** भारतीय शिक्षा की समसामयिक सन्दर्भ

भाग–एक

पूर्णांक–100

(बाह्य–80, आन्तरिक–20)

उददेश्य–

1. स्वतन्त्रता पूर्व भारत में शिक्षा के विकास की जानकारी प्राप्त कर सकेगें।
2. स्वातन्त्र्योत्तर भारत में शिक्षा के विकास का ज्ञान प्राप्त कर सकेगें।
3. शिक्षा के विकास के सन्दर्भ मे एक आलोचनात्मक दृष्टिकोण का विकास हो सकेगा।

ईकाई–1

1. भारत में शिक्षा–
   (क) वैदिककाल ।
   (ख) बौद्धकाल, ।
   (ग) मध्यकाल (मुगलकाल)

ईकाई–2

2. मैकाले कार्यवृत्त एवं वेन्स्टीक सुधार (1835)
   (क) एडम का प्रतिवेदन एवं सुझाव।
   (ख) वुड घोषणा पत्र 1854
   (ग) लार्ड कर्जन की शिक्षा नीति, राष्ट्रीय चेतना का विकास, राष्ट्रीय शिक्षा आन्दोलन।

ईकाई–3

3. भारतीय शिक्षा कमीशन 1882 एवं इसके सुझाव एवं शिक्षा के विकास पर प्रभाव।
   (क) सैडलर कमीशन का प्रतिवेदन 1917 एवं इसके आवश्यक प्रावधान।
   (ख) हन्टॉंग समीतिएवं इसके सुझाव।

ईकाई–3

   (क) शिक्षा की वर्धा स्कीम 1937
   (ख) सार्जेन्ट प्रतिवेदन 1944
   (ग) विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग 1948–49
   (घ) माध्यमिक शिक्षा आयोग, 1952–53

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1- Cramer I.F. and Brown G.S (1965)- contemparary Education A comparative study of National system, New york.

एम0ए0 (द्वितीय वर्ष) शिक्षाशास्त्र

सैमेस्टर–**III**

प्रश्न पत्र सं0–**XII** तुलनात्मक शिक्षा एवं पाठ्यक्रम विकास

भाग–एक

पूर्णांक–100

(बाह्य–80, आन्तरिक–20)

उददेश्य–

1. छात्र समसामायिक शिक्षा व्यवस्था एवं तुलनात्मक शिक्षा को समझने में समर्थ हो सकेगें।
2. छात्र विभिन्न देशों में प्रचलित शैक्षिक व्यवस्थाओं को जान सकेगें।
3. प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकीकरण तथा भारत में इसके शैक्षिक निहितार्थ को समझने मे समर्थ हो सकेगें।
4. छात्रों को माध्यमिक शिक्षा के सम्प्रत्यय एवं इसके व्यवसायीकरण के महत्त्व का ज्ञान देना।

ईकाई–1

1. तुलनात्मक शिक्षा के सम्प्रत्यय एवं उद्देश्य।
2. तुलनात्मक शिक्षा की आवश्यकता एवं क्षेत्र।
3. शिक्षा व्यवस्था को प्रभावित करने वाले कारक।

ईकाई–2

4. तुलनात्मक शिक्षा का ऐतिहासिक विकास।
5. तुलनात्मक शिक्षा के उपागम ऐतिहासिक एवं दार्शनिक, समाजशास्त्रीय ।
6. शिक्षा व्यवस्था के महत्वपूर्ण प्रावधानयू0एस0ए0यू0केएवं भारत।

ईकाई–3

7. भारत, ब्रिटेन एवं अमेरिका में पूर्व प्राथमिक शिक्षा
8. भारत, ब्रिटेन एवं अमेरिका में प्राथमिक शिक्षा (उददेश्य, विषयवस्तु, शिक्षण कीविधियांएवं मूल्यांकन) प्राथमिक शिक्षा का सार्वभौमिकीकरण एवं भारत में इसका शैक्षिक निहितार्थ।

ईकाई–4

9. भारत ब्रिटेन एवं अमेरिका में माध्यमिक शिक्षा।
10. भारत, ब्रिटेन एवं अमेरिका में माध्यमिक शिक्षा का व्यवसायीकरण।

सन्दर्भ ग्रन्थ –

1- Sodhi T.S. 1988 - A text book of comparative Education New Delhi A.I.U. IGNOU

2- Denis I 1986 - School Curriculum Planning Landon.

एम0ए0 (प्रथम वर्ष) शिक्षाशास्त्र

सैमेस्टर–**III**

प्रश्न पत्र सं0–**XIII** (ऐच्छिक 1) विशिष्ट शिक्षा

भाग–एक

पूर्णांक–100

(बाह्य–80, आन्तरिक–20)

उददेश्य–

1. छात्र विशिष्ट बालक के सम्प्रत्यय की व्याख्या कर सकेगें।
2. छात्र विशिष्ट बालकों की आवश्यकता एवं समस्याओं को जान सकेगें।
3. भारत में विशिष्ट शिक्षा के अर्थ एवं क्षेत्र को जान सकेगें।
4. समन्वित शिक्षा के अर्थ की व्याख्या कर सकेगें।
5. विभिन्न प्रकार की विकलांगता एवं इसके कारणों को समझ सकेंगे।

ईकाई–1

1. विशिष्ट शिक्षा का सम्प्रत्यय एवं विषय वस्तु–
   (क) विशिष्टता का प्रकार।
   (ख) सकारात्मक, नकरात्मक एवं मल्टीपल विचलन।
   (ग) विशिष्ट बालकों की आवश्यकता।
   (घ) विशिष्ट बालकों की समस्याएं।
2. विशिष्ट शिक्षा की प्रकृति–
   (क) विशिष्टशिक्षा के उददेश्य।
   (ख) ऐतिहासकिता।
   (ग) विशिष्ट शिक्षा के विभिन्न कार्यक्रम।
   (घ) विशिष्ट शिक्षा का क्षेत्र
   (ड) समन्वित शिक्षा समग्र/समावेशी शिक्षा।

ईकाई–2

3. विकलांग बालकों की शिक्षा
   (क) सम्प्रत्यय
   (ख) विशेषताएं
   (ग) विकलांगता के कारण बाधाएं

ईकाई–3

4. मन्दबुद्धि बालकों की शिक्षा
   (क) सम्प्रत्यय
   (ख) वर्गीकरण
   (ग) मन्दबुद्धि के कारण अध्ययन में बाधाएं
   (घ)मंदबुद्धि बालकों के लिए शैक्षिक कार्यक्रम
   (ड़) मंदबुद्धि बालको के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम।

ईकाई–4

5. दृष्टिबाधित बालको की शिक्षा
   (क) सम्प्रत्यय एवं विशेषताएं
   (ख) अन्धता की श्रेणी–दृष्टिदोष के कारण एंव बाधाएं
   (ग) शैक्षणिक कार्यक्रम

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. M.H.R.D (1993) - Seleted Education Study Ministry of Education Govt. of India.
2. Tiwari D.D (1975) - Education at the Crass Road' Chigh Publication Allahabad.

एम0ए0 (प्रथम वर्ष) शिक्षाशास्त्र

सैमेस्टर–**III**

प्रश्न पत्र सं0–**XIII** (ऐच्छिक 2) शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन

भाग–एक

पूर्णांक–100

(बाह्य–80, आन्तरिक–20)

उददेश्य–

1. छात्रों मे शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन के मूलभूत सम्प्रत्यय का ज्ञान हो सकेगा।
2. छात्र शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन के उपकरण एवं विधियां का ज्ञान प्राप्त कर सकेगें।
3. छात्रों में परीक्षणों का निर्माण एवं प्रमापीकरण के कौशल का विकास करना।
4. छात्र उचित सांख्यिकीय विधियां के सम्प्रत्यय को समझ सकेगें।

ईकाई–1

1. शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन

(क) सम्प्रत्यय, क्षेत्र एवं आवश्यकता।
(ख) मापन के स्तर
(ग) मूल्यांकन–कार्य एवं मूलभूत सिद्धान्त।
(घ) मापन एवं मूल्यांकन में अर्न्तसम्बन्ध।
(ड) टैक्सोनोमी का उद्देश्य एवं उपयोग

ईकाई–2

2. मापन का सम्प्रत्यय–
   (क) उपलब्धि परीक्षण
   (ख) अभिवृति परीक्षण
   (ग) बुद्धि परीक्षण
   (घ) अभिवृति एवं मूल्य स्केल
   (ड) रूचि मापन

ईकाई–3

3. मापन एवं मूल्यांकन के उपकरण
   (क) निबन्धात्मक एवं वस्तुनिष्ठ परीक्षण
   (ख) प्रश्नावली एवं अभीसूची
   (ग) निर्धारण मापनी
   (घ) क्रियात्मक परीक्षण

ईकाई–4

1. वैरियंस विश्लेषण
   (क) वैरियंस विश्लेषण (अप टू टू वेज) सम्प्रत्यय अवधारणा, गणितीय, मापन एवं उपयोग
   (ख) प्रश्नावली एवं अभीसूची
   (ग) निर्धारण मापनी
   (घ) क्रियात्मक परीक्षण

सन्दर्भ ग्रन्थ–

5. शशी प्रभा शर्मा – शिक्षा और मनोविज्ञान में मापन एवं मूल्यांकन, कनिष्क मधुलिका शर्मा – पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली।
6. डॉ0 आर0 ए0 शर्मा – मापन एवं मूल्यांकन में साख्यिकी, लायल बुक डिपो मेरठ
7. डॉ0 वेंकटराव पी0 – शिक्षा सांख्यिकी, राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ तिरूपति
8. मधुसूदन त्रिपाठी – शिक्षा अनुसंधान और सांख्यिकी ओमेगा प्रकाशन नई दिल्ली

एम0ए0 (प्रथम वर्ष) शिक्षाशास्त्र

सेमेस्टर–**III**

प्रश्न पत्र सं0–**XIII** (ऐच्छिक 3) अध्यापक शिक्षा

भाग–एक

पूर्णांक–100

(बाह्य–80, आन्तरिक–20)

उददेश्य–

1. भारत में अध्यापक शिक्षा के अर्थ और सम्प्रत्यय को जान सकेगें।
2. छात्र अध्यापक शिक्षा के लक्ष्य, उद्देश्य एवं ऐतिहासिकता को जान सकेगें।
3. शिक्षण व्यवसाय एवं अध्यापक शिक्षा के विभिन्न कार्यक्रमों के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकेगें।

ईकाई–1

1. अध्यापक शिक्षा का अर्थ एवं सम्प्रत्यय
   (क) अध्यापक शिक्षा का ऐतिहासिक विकास
   (ख) विभिन्न आयोगों के अध्यापक शिक्षा के लिए सुझाव विशेष रूप से
   1. कोठारी आयोग,
   2. नई शिक्षा नीति 1986
   3. कार्य योजना 1992

ईकाई–2

2. अध्यापक शिक्षा का लक्ष्य एवं उद्देश्य
   (क) प्राथमिक स्तर पर
   (ख) माध्यमिक स्तर पर
   (ग) महाविद्यालयीय स्तरपर

ईकाई–3

3. शिक्षण एक व्यवसाय के रूप में
4. शिक्षक संस्थाओं के लक्ष्य एवं उद्देश्य
5. व्याससायिक संस्थाओं की आवश्यकता
6. कर्मचारी उन्मुखी कार्यक्रम

ईकाई–4

7. शिक्षक कार्य निष्पादन मूल्यांकन
8. अध्यापक शिक्षा का इन्टर्नशिप
9. सेवा पूर्व–अध्यापक शिक्षा
10. सेवा–अध्यापक–शिक्षा

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. शास्त्री के0एन0 – अध्यापक शिक्षा, प्रेरणा प्रकाशन, रोहिणी दिल्ली
2. सिंह डॉ0 मया शंकर – अध्यापक शिक्षा की चुनौतियां, अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली
3. महर्षि सतोष कुमार – अध्यापक शिक्षा, नेहा पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली
4. सिंह डॉ0 मया शंकर – अध्यापक शिक्षा में गुणवत्ता का विकास, अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली

एम0ए0 (प्रथम वर्ष) शिक्षाशास्त्र

सैमेस्टर–**III**

प्रश्न पत्र सं0–**XIV** (ऐच्छिक 1) शिक्षा का प्रबन्ध एवं प्रशासन

भाग–एक

पूर्णांक–100

(बाह्य–80, आन्तरिक–20)

उददेश्य–

1. छात्र शैक्षिक प्रबन्धन का सम्प्रत्यय एवं प्रासंगिकता को समझने में समर्थ हो सकेगें।
2. छात्र शैक्षिक प्रबन्धन की विभिन्नस्तरों पर प्रक्रिया को जान सकेंगे।
3. छात्र शिक्षा के वित्तीय स्रोत एवं समस्याओं को समझने समर्थ हो सकेगे।
4. योजना एवं क्रियान्वन को जानने मे छात्रों की सहायता करना।

ईकाई–1

1. शैक्षिक प्रशासन के अर्थ, प्रकृति, क्षेत्र, आवश्यकता, एवं कार्य।
2. प्रबन्धन, प्रशासन पर्यवेक्षण एवं योजना के बीच अर्न्तसम्बन्ध।

ईकाई–2

3. शैक्षिक प्रशासन के आधुनिक सम्प्रत्ययों का विकास (1900 से आज तक)
   (क) टेलरिज्म,
   (ख) प्रशासन एक प्रक्रिया के रूप में
   (ग) प्रशासन का मानवीय उपाबत से सम्बन्ध
4. कर्मचारियों की मनोवैज्ञानिक आवश्यकता की पूर्त्ति

ईकाई–3

5. शिक्षक प्रशासन में विशेष प्रचलन
   (क) निर्णय लेना
   (ख) संस्थागत वैधानिक क्रियाकलाप
   (ग) सांस्थनिक विकास
   (घ) पी0ई0आर0टी0
   (ड) उद्देश्यों के अनुसार प्रबन्धन (एम0ओ0बी0)

ईकाई–4

6. नेतृत्व का अर्थ, आवश्यकता एवं महत्त्व
   (क) नेतृत्व के सिद्धान्त
   (ख) नेतृत्त्व शैली
   (ग) नेतृत्त्व का मापन

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. मिश्रा मंजू – विद्यालय प्रशासन एवं स्वास्थ्य शिक्षा ओमेगा प्रकाशन, नई दिल्ली
2. सिंह श्याम – विद्यालय संगठन एवं प्रबन्ध, ओमेगा प्रकाशन, नई दिल्ली

एम0ए0 (प्रथम वर्ष) शिक्षाशास्त्र

सैमेस्टर–**III**

प्रश्न पत्र सं0–**XIV** (ऐच्छिक 2) शैक्षिक तकनीक

भाग–एक

पूर्णांक–100

(बाह्य–80, आन्तरिक–20)

उददेश्य–

1. शैक्षिक तकनीक के सम्प्रत्यय, क्षेत्र एवं विशेषताओं को समझ सकेगे।
2. छात्र कठोर तन्त्र एवं कोमलतन्त्र में अन्तर कर सकेगें।
3. शिक्षण, प्रशिक्षण एवं अभिक्रमण में अन्तर कर सकेगे।
4. छात्र अभिक्रमित अधिगम के विभिन्न प्रकारों को सीख सकेगें।।

ईकाई–1

1. शैक्षिक तकनीक, अर्थ, सम्प्रत्यय एवं क्षेत्र शैक्षिक प्रणाली विश्लेषण और इसकी विशेषताएं

ईकाई–2

2. शैक्षिक तकनीक के तत्व
   हार्डवेयर एवं साफ्टवेयर
3. शैक्षिक तकनीकि में मल्टी मीडिया, उपागम, अर्थ उपयोग एवं सीमाएं।

ईकाई–3

4. शिक्षण के मॉडल–शिक्षण विभिन्न प्रकार–सिद्धान्त निरूपण, निर्देशन, अनुबन्धन एवं प्रशिक्षण
5. शिक्षण की आवश्यकता, शिक्षण से पूर्व, शिक्षण के पश्चात्
6. विभिन्न स्तरों पर शिक्षण स्मृति, समझ एवं शिक्षण अधिगम आयोजन के स्तर पर।

ईकाई–4

7. अभिक्रमित शिक्षण उदभव, सिद्धान्त एवं विशेषताएं
8. प्रकार– रेखीय, शाखीय एवं मैथेटिक्स
9. अभिक्रमित शिक्षण का विकास–तैयारी, लेखन परीक्षण एवं मूल्यांकन

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. डॉ0 पी0एन0 सिंहल – शैक्षिक तकनीकी की आवश्यकताएं एवं प्रबन्ध अर्णव प्रकाशन
   एवं डॉ0 हरेन्द्र सिंह – मन्दिर दिल्ली
2. श्रीमती जैन स्वाती – शैक्षिक तकनीकी के तत्व एवं प्रबन्ध साधना प्रकाशन मेरठ
3. डॉ0 अग्रवाल एस0 – भावी शिक्षक एवं शिक्षा, श्री कविता प्रकाशन जयपुर
   गौड़ यशवन्ती

एम0ए0 (प्रथम वर्ष) शिक्षाशास्त्र

सैमेस्टर–**III**

प्रश्न पत्र सं0–**XIV** (ऐच्छिक 3) शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन मूलभूत सप्रत्यय

भाग–एक

पूर्णांक–100

(बाह्य–80, आन्तरिक–20)

उददेश्य–

1. समूह में, समूह के लिए, एवं समूह के साथ कार्य का महत्त्व का ज्ञान हो सकेगा।
2. वैयक्तिक भिन्नता एवं क्षमता का ज्ञान कराना।
3. छात्र उचित विकल्प का चयन कर सकेगें विशेष रूप से शैक्षिक एवं व्यवसायिक क्षेत्र में।

ईकाई–1

1. निर्देशन–अर्थ, सम्प्रत्यय, सिद्धान्त, आवश्यकता एवं महत्त्व
2. निर्देशन के प्रकार–शैक्षिक निर्देशन, व्यवसायिक निर्देशन एवं व्यक्तिगत निर्देशन।

ईकाई–2

3. विद्यालयों में निर्देशन सेवाओं का आयोजन–विद्यालयों में प्रभावी निर्देशन सेवाओं के आयोजन की आवश्यकता, सिद्धान्त सोपान एवं युक्तियां

ईकाई–3

4. समूह निेर्देशन–अर्थ, लाभ, सिद्धान्त एवं समूह निर्देश्न के प्रकार
5. विशिष्ट बालकों का निर्देशन, विकलांग, प्रतिभाशाली एवं मन्दबृद्धि बालक,

ईकाई–3

6. परामर्श–अर्थ, आवश्यकता, प्रक्रिया एवं प्रकार।
7. निदेशात्मक परामर्श–सम्प्रत्यय, लाभ एवं सीमाएं।
8. अनिदेशात्मक परामर्श–सम्प्रत्यय लाभ एवं सीमाएं।
9. ऐच्छिक परामर्श– सम्प्रत्यय लाभ एवं सीमाएं।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. डॉ0 सी0 ओबराय – शैक्षिक तथा व्यावसायिक निर्देशन एवं परामर्श, इन्टरनेशनल पब्लिसिंग हाऊस मेरठ
2. मधुसूदन त्रिपाठी – शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श, ओमेगा प्रकाशन नई दिल्ली
3. डॉ0 शशी कान्त त्रिपाठी – निर्देशन एवं परामर्श आदित्य बुक सेन्टर वाराणसी

डॉ0 राखी देव

चतुर्थ सेमेस्टर

एम0ए0 (प्रथम वर्ष) शिक्षाशास्त्र

सैमेस्टर–**IV**

प्रश्न पत्र सं0–**XVI** भारतीय शिक्षा में समसामयिक सन्दर्भ

भाग–दो

पूर्णांक–100

(बाह्य–80, आन्तरिक–20)

उददेश्य–

1. छात्रों में वर्तमान भारतीय शैक्षिक चुनौतियों के प्रति समीक्षात्मक समक्ष उत्पन्न करना।
2. भारतीय शिक्षा के ससमसामयिक मुद्दों का वैश्विक परिप्रेक्ष्य में ज्ञान कराना।
3. एक विशिष्ट शैक्षिक शाखा के रूप में शिक्षा के विकास के प्रति समीक्षात्मक बोध उत्पन्न करना।

प्रश्नपत्र की विषय वस्तु

ईकाई–1

1. भारतीय शिक्षा आयोग – 1964–66
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 1986
3. संशोधित राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 1992

ईकाई–2

4. शिक्षा का सार्वभौमिकरण एवं अन्य सम्बन्धित विषय जैसे प्राथमिक शिक्षा में साताय एवं पूर्णता दर आदि।
5. शिक्षा का व्यवसायीकरण।
6. बालिकाओं के लिए शिक्षा।

ईकाई–3

7. सामाजिक रूप से पिछडे वर्ग –अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ी जाति के लोगों की शिक्षा।
8. शिक्षा में गुणवत्ता एवं उत्कृष्टता से सम्बन्धित विषय।
9. शैक्षिक अवसरों की समानता प्रदान करने वाले सामाजिक समता से सम्बन्धित विषय।

ईकाई–4

1. दूरस्थ शिक्षा प्रणाली एवं (ओपन लर्निंग) मुक्त अधिगम से सम्बन्धित विषय
2. जीवन कौशल एवं मानव मूल्यों के लिए शिक्षा।
3. शिक्षा के माध्यम (भाषा चयन) से सम्बन्धित विषय–त्रिभाषा सूत्र।
4. वैश्विक सन्दर्भ में भावात्मक एकता एवं अन्तर्राष्ट्रीय अवबोध से सम्बन्धित विषय

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1- Cramer I.F. and Brown G.S (1965)- contemparary Education A comparative study of National system, New york.

एम0ए0 (प्रथम वर्ष) शिक्षाशास्त्र

सैमेस्टर–**IV**

प्रश्न पत्र सं0–**XVII** पाठ्यचर्या विकास एवं तुलनात्मक शिक्षा

भाग–दो

पूर्णांक–100

(बाह्य–80, आन्तरिक–20)

उददेश्य–

1. छात्रों को शैक्षिक प्रणाली के विभिन्न तथ्यों एवं उपागमों से परिचित कराना।
2. छात्रों को विभिन्न देशों में प्रचलित शिक्षा प्रणाली के प्रभाव को आत्मसात करने में कुशल बनाना।
3. भारतीय शैक्षिक समस्याओं के समाधान हेतु शिक्षा के अनुप्रयोग का दृष्टिकोण उत्पन्न करना।
4. छात्रों का पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम के सम्प्रत्यय तथा पाठ्यक्रम मूल्यांकन की प्रक्रिया से परिचित कराना।
5. छात्रों को पाठ्यचर्या निमार्ण के महत्त्वपूर्ण सिद्धान्तों एवे पाठ्यचर्या को प्रभावित करने वाले विभिन्न तथ्यों को समझ सकने मे सक्षम बनाना।
6. भारतीय शैक्षिक पाठ्यक्रम के क्षेत्र में नवीन विषयों प्रणाली, एवं अनुसन्धान को समझने में छात्रों की सहायता करना।

ईकाई–1

5. ब्रिटेन संयुक्त राज्य अमेरिका एवं भारत में उच्च शिक्षा।
6. दूरस्थ शिक्षा–सम्प्रत्यय, आवश्यकता एवं ब्रिटेन, संयुक्त राज्य अमेरिका एवं भारत के विशेष सन्दर्भ में

ईकाई–2

7. ब्रिटेन संयुक्त राज्य अमेरिका एवं भारत में शैक्षिक प्रशासन
8. ब्रिटेन, संयुक्त राज्य अमेरिका एवं भारत में अध्यापक शिक्षा

ईकाई–3

9. पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम का सम्प्रत्यय
10. पाठ्यचर्या विकास के सिद्धान्त
11. पाठ्यचर्या विकास को प्रभावित करने वाले तत्त्व –दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक एवं विषयक्षेत्र से सम्बन्धित तत्त्व।

ईकाई–4

12. पाठ्यचर्या विकास के विभिन्न मॉडल–प्रशासनिक, ग्रासरूट मॉडल प्रदर्शन एवं प्रणाली विश्लेषण।
13. अभिगम उपलब्धि के परिप्रेक्ष्य में पाठ्यक्रम मूल्यांकन सम्प्रत्यय, निर्माण एवं समग्र मूल्यांकन, अंक प्रदान करने, रैटिंग एवं ग्रेडस की प्रणाली।

सन्दर्भ ग्रन्थ –

3- Sodhi T.S. 1988 - A text book of comparative Education New Delhi A.I.U. IGNOU
4- Denis I 1986 - School Curriculum Planning Landon.

एम0ए0 (प्रथम वर्ष) शिक्षाशास्त्र

सैमेस्टर–**IV**

प्रश्न पत्र सं0–**XVIII** (**वैकल्पिक 1**)विशिष्ट शिक्षा

भाग–दो

पूर्णांक–100

(बाह्य–80, आन्तरिक–20)

उददेश्य–

1. छात्र विशिष्ट बालकों के सम्प्रत्यय को परिभाषित करने में सक्षम सकेगें।
2. विशिष्ट बालकों की समस्याओं और आवश्यकताओं की व्याख्या कर सकेगें।
3. भारत में विशिष्ट शिक्षा के अर्थ एवं क्षेत्र की व्याख्या कर सकेगें।
4. समग्र शिक्षा/समाहारी शिक्षा के अर्थ को समझ सकेगें।
5. विभिन्न प्रकार की विकलागंता से ग्रस्त बालकों एवं उनके कारण की व्याख्या कर सकेगें।
6. विशिष्ट बालकों के लिए विभिन्न प्रकार के शैक्षिक कार्यक्रमों का वर्णन कर सकेगें।

ईकाई–1

1. श्रवण बाधित बालकों की शिक्षा–
   (क) विशेषताएं
   (ख) प्रकार
   (ग) पहचान
   (घ) शिक्षा एवं कार्यक्रम

ईकाई–2

2. अधिगम अक्षम बालकों की शिक्षा।
   (क) विशेषताएं
   (ख) प्रकार
   (ग) पहचान
   (घ) शिक्षा एवं सुधारात्मक कार्यक्रम

ईकाई–3

3. प्रतिभाशाली एवं सृजनशील बालकों की शिक्षा।
   (क) विशेषताएं
   (ख) प्रकार
   (ग) पहचान
   (घ) शिक्षा एवं कार्यक्रम

ईकाई–4

4. शिक्षा एवं बाल अपराधी।
   (क) विशेषताएं
   (ख) प्रकार
   (ग) पहचान
   (घ) शिक्षा एवं कार्यक्रम
5. विशिष्ट बालकों के लिए निर्देशन एवं परामर्श
   (क) अर्थ एवं आवश्यकता

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. M.H.R.D (1993) - Seleted Education Study Ministry of Education Govt. of India.
2. Tiwari D.D (1975) - Education at the Crass Road' Chigh Publication Allahabad.

एम0ए0 (प्रथम वर्ष) शिक्षाशास्त्र

सैमेस्टर–**IV**

प्रश्न पत्र सं0–**XVIII** (**वैकल्पिक 2**)शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन

भाग–दो

पूर्णांक–100

(बाह्य–80, आन्तरिक–20)

उददेश्य–

1. छात्रों को शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन के प्रारम्भिक सम्प्रत्यय एवं प्रयोगों से परिचित कराना।
2. छात्रों को मापन एवं मूल्यांकन के उपकरण एवं तकनीकि से परिचित कराना।
3. परीक्षण निमार्ण एवं प्रमापीकरण के लिए कौशल एवं क्षमता का विकास करना।
4. छात्रों को यह समझने में सहायता करना कि कैसे विभिन्न शैक्षिक आवश्यकताओं का मापन मूल्यांकन एवं व्याख्या की जाती है, और कैसे उससे निर्गत नियम अधिगमकर्त्ता के लिए सहायक होते है।
5. स्मुचित साख्यिकीय तकनीकि एवं परीक्षण के प्रयोग एवं व्याख्या की क्षमता उत्पन्न करना।

ईकाई–1

1. अच्छे मापक की विशेषताएं।
   सही एवं त्रुटिपूर्ण प्राप्तांको का सम्प्रत्यय
   विश्वसनीयता
   वैधतामानक
   उपयोगिता

ईकाई–2

2. मापन एवं मूल्यांकन की नवीन विधियां।
   ग्रेडिग प्रणाली–अकं एवं ग्रेड सिस्टम के गुण–दोष
   सेमेस्टर सिस्टम
   सतत् एवं समग्र मूल्यांकन
   प्रश्न बैंक
   मूल्यांकन में संगणक का प्रयोग

ईकाई–3

3. परीक्षण का प्रमापीकरण
   नियम आधारित एवं मानक सन्दर्भित।
   प्रमापीकृत प्राप्तांक टी प्राप्तांक एवं सी प्राप्तांक।

उपलब्धि परीक्षण का निर्माण एवं प्रमापीकरण।
परीक्षण प्राप्तांक की व्याख्या एवं छात्रों को पृष्ठपोषण प्रदान करने की विधियां।

ईकाई–4

4. सहसम्बन्ध सम्प्रत्यय, गणना, एवं सार्थकता
बाइसीरियल सहसम्बन्ध।
प्वाइन्ट बाइसीरियल सहसम्बन्ध।
टेट्राकोरिक सहसम्बन्ध।
फाई–सहसम्बन्ध।
आंशिक सहसम्बन्ध।
बहुआयामी सहसम्बन्ध।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. शर्मा शशी प्रभा – शिक्षा और मनोविज्ञान में मापन एवं मूल्यांकन, कनिष्क
शर्मा मधुलिका – पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली।
2. शर्मा डॉ0 आर0 ए0 – मापन एवं मूल्यांकन में साख्यिकी, लायल बुक डिपो मेरठ
3. डॉ0 वेंकटराव पी0 – शिक्षा सांख्यिकी, राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ तिरूपति
4. त्रिपाठी मधुसूदन – शिक्षा अनुसंधान और सांख्यिकी ओमेगा प्रकाशन नई दिल्ली

एम0ए0 (प्रथम वर्ष) शिक्षाशास्त्र

सैमेस्टर–**IV**

प्रश्न पत्र सं0–**XVIII** (**वैकल्पिक 3**)अध्यापक शिक्षा

भाग–दो

पूर्णांक–100

(बाह्य–80, आन्तरिक–20)

उददेश्य–

1. छात्रों को निम्नलिखित को समझने मे सक्षम बनाना।
2. छात्रों को शिक्षण व्यवसाय एवं अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के विभिन्न प्रकारों से परिचित कराना।
3. भारत में अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम का विकास
4. प्रभावशाली सम्प्रेषण हेतु अध्यापकों के लिए आवश्यक विभिन्न प्रकार की क्षमता।
5. अध्यापक शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में अनुसन्धान।

ईकाई–1

1. दूरस्थ शिक्षा एवं अध्यापक शिक्षा।
2. अभिविन्यास एवं पुनश्चर्या कार्यक्रम।
3. विशिष्ट विद्यालयों के लिए शिक्षक तैयार करना
4. विभिन्न स्तरों पर अध्यापक शिक्षा के निर्धारित पाठ्यक्रम को लागू करना।

ईकाई–2

5. सेवारत अध्यापक शिक्षा के विभिन्न अभिकरण
6. शिक्षणाभ्यास के उद्देश्य एवं व्यवस्थापन।
7. अध्यापक शिक्षा एवं अभ्यास विद्यालय की वर्तमान समस्याएं।

ईकाई–3

8. अध्यापक शिक्षा में निर्देशन की युक्तियां
9. व्याख्यान
10. वाद–विवाद एवं परिचर्चा
11. ब्रेन स्टार्मिगं (मस्तिष्क मन्थन)
12. अनुरूपण
13. क्रिया अनुसन्धान
14. पर्यवेक्षित अध्ययन

ईकाई–4

5. अध्यापक शिक्षा में अनुसन्धान के क्षेत्र–(निम्नलिखित के विशेष सन्दर्भ में)
   1–शिक्षक प्रभावशीलता।
   2– अध्यापक शिक्षा में प्रवेश की समस्या।
   3– अध्यापक के व्यवहार का परिशोधन ।

4– विद्यालय की प्रभावशीलता ।

सन्दर्भ ग्रन्थ –

1. शास्त्री के0एन0 – अध्यापक शिक्षा, प्रेरणा प्रकाशन, रोहिणी दिल्ली
2. सिंह डॉ0 मया शंकर – अध्यापक शिक्षा की चुनौतियां, अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली
3. महर्षि सतोष कुमार – अध्यापक शिक्षा, नेहा पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली
4. सिंह डॉ0 मया शंकर – अध्यापक शिक्षा में गुणवत्त का विकास, अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली

एम0ए0 (द्वितीय वर्ष) शिक्षाशास्त्र

सेमेस्टर–**IV**

प्रश्न पत्र सं0–**XIX**(**वैकल्पिक 1**)शिक्षा प्रबन्धन एवं प्रशासन

भाग–दो

पूर्णांक–100

(बाह्य–80, आन्तरिक–20)

उददेश्य–

1. छात्रों को शिक्षा के प्रबन्ध एवं उसकी महत्ता से परिचित कराना।
2. विभिन्न स्तरों पर एक प्रक्रिया के रूप में विद्यालय प्रबन्धन को समझने मे छात्रों की सहायता करना।
3. छात्रों के शिक्षा एवं शैक्षिक प्रक्रिया की विभिन्न समस्याओं के प्रति समझ उत्पन्न करना।
4. शिक्षा के संसाधनों एव शैक्षिक वित्तीय समस्याओं को जानने में छात्रों की सहायता करना।
5. छात्रों को नियोजन एवं व्यवस्थापन के बारे में सीखने के लिए प्रेरित करना।

ईकाई–1

1. शैक्षिक नियोजन–
   (क) अर्थ,प्रकृति एवंआवश्यकता।
   (ख) शैक्षिक योजना की महत्ता।
   (ग) शैक्षिक योजना की समस्याएं
   (घ) शैक्षिक योजना के उपागम।

ईकाई–2

2. शैक्षिक नियोजन के प्रकार–
   (क) सास्थानिक योजना
   (ख) परिप्रेक्ष्यात्मक योजना

ईकाई–3

3. शैक्षिक पर्यवेक्षण
   (क) शैक्षिक पर्यवेक्षण का अर्थ एवं प्रकृति
   (ख) पारम्परिक एवं आधुनिक पर्यवेक्षण
   (ग) शैक्षिक पर्यवेक्षण की आवश्यकता एवं कार्य

ईकाई–4

4. पर्यवेक्षण–
   (क) पर्यवेक्षण सम्बन्धी कार्यक्रम की योजना, व्यवस्थपन एवं क्रियान्वयन
   (ख) शैक्षिक पर्यवेक्षण के सिद्धान्त

सन्दर्भ ग्रन्थ –

3. मिश्रा मंनू – विद्यालय प्रशासन एवं स्वास्थ्य शिक्षा ओमेगा प्रकाशन, नई दिल्ली
4. सिंह श्याम – विद्यालय संगठन एवं प्रबन्ध, ओमेगा प्रकाशन, नई दिल्ली

एम0ए0 (द्वितीय वर्ष) शिक्षाशास्त्र

सेमेस्टर–**IV**

प्रश्न पत्र सं0–**XVIII** (**वैकल्पिक 2**)शैक्षिक तकनीकी

भाग–दो

पूर्णांक–100

(बाह्य–80, आन्तरिक–20)

उददेश्य–

1. छात्रों को शैक्षिक उद्देश्यों के निर्धारण के कौशल से परिचित कराना।
2. सूक्ष्म शिक्षण के माध्यम से छात्रों को शिक्षण कौशल को सीखने मे सक्षम बनाना।
3. शिक्षक व्यवहार में परिवर्तन लाने हेतु शैक्षिक तकनीकि के प्रयोग में कुशल बनाना।
4. विभिन्न प्रकार के मूल्यांकन उपकरणों के निर्माण की योग्यता विकसित करना।

ईकाई–1

1. शिक्षण व्यवहार का परिशोधन–सूक्ष्मशिक्षण, फ्लैण्डर का अन्तःक्रिया विश्लेषण एवं अनुरूपण।
2. सम्प्रेषण प्रक्रिया– सम्प्रेषण का सम्प्रत्यय, सिद्धान्त सम्प्रेषण के प्रकार एवं बाधाएं, साधन एवं अवरोधन,
   कक्षागत सम्प्रेषण (अन्तःक्रिया, वाचिक एवं अवाचिक)

ईकाई–2

3. शिक्षण के मॉडल्स– सम्प्रत्यय, शिक्षण मॉडल के विभिन्न वर्ग
4. निर्देशन प्रणाली का निर्माण– निर्देशन उद्देश्यो का निमार्ण एवं कार्य विश्लेषण

ईकाई–3

5. निर्देशात्मक युक्तियों का निर्माण– व्याख्यान, दलशिक्षण, परिचर्चा वादविवाद, सम्मेलनटयूटैरियल एवं ब्रेन स्टामिंग सत्र
6. मूल्यांकन परीक्षण का निर्माण–निकष सन्दर्भित एवं मानक सन्दर्भित परीक्षण।

ईकाई–4

7. दूरस्थ शिक्षा में शैक्षिक तकनीकि का प्रयोग।
8. दूरस्थ एवं मुक्त अधिगम प्रणाली में भेद।
9. दूरस्थ शिक्षा में छात्र सहायक सेवाएं
10. दूरस्थ शिक्षा में मूल्यांकन प्रक्रिया
11. दूरस्थ शिक्षा में परामर्श।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. डॉ0 पी0एन0 सिंहल – शैक्षिक तकनीकि की आवश्यकताएं एवं प्रबन्ध अर्णव प्रकाशन
   एवं डॉ0 हरेन्द्र सिंह – मन्दिर दिल्ली
2. श्रीमती जैन स्वाती – शैक्षिक तकनीकी के तत्व एवं प्रबन्ध साधना प्रकाशन मेरठ
3. डॉ0 अग्रवाल एस0 – भावी शिक्षक एवं शिक्षा, श्री कविता प्रकाशन जयपुर
   गौड़ यशवन्ती

एम0ए0 (द्वितीय वर्ष) शिक्षाशास्त्र

सेमेस्टर–**IV**

प्रश्न पत्र सं0–**XIX** (**वैकल्पिक 03**)शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन तकनीकी एवं क्रियान्वयन

भाग–दो

पूर्णांक–100

(बाह्य–80, आन्तरिक–20)

उददेश्य–

1. छात्र, जीवन एवं अपने चारों तरफ के संसार के समझने में सक्षम होगें।
2. छात्र जीनव, शिक्षा एवं व्यवसाय सम्बन्धी सही चुनाव की महत्ता को समझ सकेगें।
3. समूह के साथ, समूह के लिए और, समूह में कार्य करने के महत्त्व से परिचित होगें।
4. छात्रों में यह समझ उत्पन्न होगी कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी अद्वितीय क्षमता द्वारा अद्वितीय योगदान देकर समाज के बहुमुखी विकास में सहायक बन सकता है।
5. छात्र, व्यक्ति की व्यक्तिगत आवश्यकताओ को समझ सकेगें।

ईकाई–1

1. व्यासवसायिक सूचना

(क) अर्थ एवं आवश्यकता।

(ख) व्यावयायिक सूचना प्रदान करने की विधियां।

(ग) भारत में व्यावसायिक सूचना के स्रोत

ईकाई–2

2. कार्य विश्लेषण – अर्थ, प्रकार एवं उद्देश्य।
3. कार्य सन्तुष्टि – अर्थ एवं कार्य सन्तुष्टि को प्रभावित करने वाले कारक।

ईकाई–3

12. नियोजन सेवाएं– अर्थ, कार्य एवं सिद्धान्त
13. अनुवर्ती सेवाएं– अर्थ, उद्देश्य एवं विशेषताएं

ईकाई–4

14. व्यक्ति अध्ययन –
15. सूचना सम्बन्धी आंकड़ो के सग्रह की तकनीकि
16. प्रमापीकृत एवं अप्रमापीकृत तकनीकि
17. एनेक्डोटल रिकार्डस
18. जीवनवृत्त रेटिंग स्केल, व्यक्ति वृत्त अध्ययन, समाजमिति, प्रश्नावली, निरीक्षण एवं साक्षात्कार संचयीअभिलेख

सन्दर्भ ग्रन्थ –

4. डॉ0 सी0 ओबराय – शैक्षिक तथा व्यावसायिक निर्देशन एवं परामर्श, इन्टरनेशनल पब्लिसिंग हाऊस मेरठ
5. मधुसूदन त्रिपाठी – शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श, ओमेगा प्रकाशन नई दिल्ली
6. डॉ0 शशी कान्त त्रिपाठी – निर्देशन एवं परामर्श आदित्य बुक सेन्टर वाराणसी

डॉ0 राखी देव